ब्राह्मण ग्रन्थ

वेदों के पश्चात् वैदिक साहित्य में ब्राह्मण ग्रन्थों का स्थान है। ये ब्राह्मण ग्रन्थ वैदिक संस्कृति, धर्म और दर्शन को समझने के लिए अपरित्याज्य है। इनके महत्त्व और प्राचीनता का अनुमान इसी से स्पष्ट है कि अनेक ग्रन्थों में वैदिक संहिताओं की भाँति इन्हें भी 'वेद' कहकर पुकारा गया है। 'मन्त्रब्राह्मणात्मको वेदः' अथवा 'मन्त्रब्राह्मणयोर्वेदनामधेयम्' अर्थात् मन्त्र और ब्राह्मण वेद है। वास्तव में वैदिक संहिताओं और ब्राह्मण ग्रन्थों का अस्तित्व पृथक् है। एक मूल है, तो दूसरे उसके व्याख्या ग्रन्थ हैं। वेद और ब्राह्मण ग्रन्थ एक दूसरे के पूरक हैं। जो मन्त्र संहिताओं में दिये गये हैं, ब्राह्मण ग्रन्थ उनकी व्याख्या करते हैं। इस प्रकार वस्तुतः ब्राह्मण ग्रन्थों के बिना वेदों को पूर्ण रूप से समझना असम्भव है, अतः लाक्षणिक रूप में ब्राह्मण ग्रन्थों को भी वेद कह दिया गया है।

ब्राह्मण का अर्थ:- (क) 'ब्राह्मण' शब्द 'बृहू वर्धने' धातु से निष्पन्न है जिसका अर्थ है 'बढ़ाना'। 'ब्राह्मण' उन ग्रन्थों का नाम है जो वेदों में प्रतिपादित यज्ञ विधियों का विस्तार से वर्णन करते हैं।

"ब्राह्मणं नाम कर्मणस्तन्मन्त्राणां व्याख्यानग्रन्थः"।
(ख) 'ब्रह्मन्' का अर्थ मन्त्र भी है। अतः ब्राह्मण का अर्थ होगा 'मन्त्रों की व्याख्या करने वाले एवं उनका विनियोग देने वाले ग्रन्थ।
(ग) महाभाष्यकार पतञ्जलि ने ब्रह्मन् और ब्राह्मण शब्द का एक ही अर्थ माना है- 'समानार्थावेतौ ब्रह्मन् शब्दो ब्राह्मणशब्दश्च' (महाभाष्य 5|2|1) इनके अनुसार 'चारों वेदों को जानने वाले ब्राह्मणों के द्वारा किया गया वेद का व्याख्यान' ब्राह्मण का अर्थ है।

ब्राह्मणों का मुख्य विषय है 'यज्ञसम्बन्धी नियमों, विधियों तथा विनियोगों की विस्तृत विवेचना' वाचस्पति मिश्र के अनुसार ब्राह्मण ग्रन्थों का वर्ण्य-विषय निरुक्ति, मन्त्रों का विनियोग, अर्थवाद और विधि बतलाना है। जैसा कि गया है-

"नैरुक्त्यं यस्य मन्त्रस्य विनियोगः प्रयोजनम्।
प्रतिष्ठानं विधिश्चैव ब्राह्मणं तदिहोच्यते"।।

ब्राह्मण ग्रन्थों का वर्ण्य विषय:-

वर्ण्य विषय की दृष्टि से ब्राह्मण ग्रन्थों के तीन भाग हैं।
(i) विधि (ii) अर्थवाद और (iii) उपनिषद्।
(i) विधि का अर्थ है- नियम या सिद्धान्त। विधियाँ दो प्रकार की है (क) अप्रवर्तप्रवर्तनम् - जो यज्ञ न करने वालों को यज्ञ करने के लिए प्रेरित करती है और (ख) अज्ञातज्ञापनम् - जो अज्ञात का ज्ञान करवाती है। विधिवाक्य धर्म के लिए प्रमाण माने

गये हैं। 'विधिवक्यं धर्मे प्रमाणम्'।
(ii) अर्थवाद का अर्थ - प्रशस्तिपूर्ण व्याख्या। यह भाग बतलाता है कि अमुक यज्ञ करने से अमुक फल की प्राप्ति होगी। इसमें उपाख्यानों द्वारा गूढ़ से गूढ़ रहस्यों को भी समझाया गया है।
(iii) तीसरे उपनिषद् भाग में ब्रह्मतत्त्व के विषय में विचार किया गया है।

प्रमुख ब्राह्मण :-

ऋग्वेद के ब्राह्मणों में ऐतरेय ब्राह्मण तथा शांखायन ब्राह्मण का नाम लिया जाता है जबकि यजुर्वेद के ब्राह्मणों में 'शतपथब्राह्मण' का नाम सुप्रसिद्ध है। यह अत्यन्त प्राचीन एवं विपुलकाय 100 अध्यायोंवाला यागानुष्ठान का सर्वोत्तम प्रतिपादक ग्रन्थ है। यह ग्रन्थ माध्यन्दिन तथा काण्व दोनों शाखाओं पर उपलब्ध होता है। सामवेदीय ब्राह्मणों में ताण्ड्य ब्राह्मण, षड्विंश ब्राह्मण, सामविधान ब्राह्मण, आर्षेय ब्राह्मण, देवताध्याय ब्राह्मण, या दैवत ब्राह्मण, उपनिषद् (मन्त्र) या छान्दोग्य ब्राह्मण का नाम लिया जाता है। अथर्ववेद पर एकमात्र 'गोपथब्राह्मण' ही उपलब्ध होता है इति।